ISSN: 2249 - 7862 (Print)
Aureole, Vol. X, December 2018 PP15-18

हाशिएकृत समाज और 'सीढ़ियाँ, माँ और उसका देवता'

* रमसीना. पी

सारांश

गजानन माधव मुक्तिबोध समकालीन हिन्दी साहित्य के बुनियाद पर प्रतिष्ठित साहित्यकार है। अपने साहित्यिक जीवन के आरंभ से लेकर एक जीवन दर्शन अपनाने का प्यास मुक्तिबोध में था। एक जीवन दर्शन अर्थात मार्क्सवाद को अपनाने के बाद वे जीवन और साहित्य में मार्क्सवादी बन गये थे। मार्क्सवादी दर्शन का अधिकांश तत्व मुक्तिबोध के साहित्य में पाया जाता है। समानता पर आधारित एक समाज मुक्तिबोध का स्वप्न था। वे शोषण के विरुद्ध क्रांति चलाना चाहते हैं। पूंजीवाद का विरोध तथा उस व्यवस्था के विरुद्ध कुछ करने की संकल्पना का जो स्वप्न मुक्तिबोध के साहित्य का प्राण है।

Keywords: हाशिएकृत समाज, सीढ़ियाँ, कट्टरता, मुखबिरी, विस्थापित

* *शोधार्थी, हिंदी विभाग, निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा*

अपने समय के बोध को व्यक्त करनेवाला साहित्य है समकालीन साहित्य। परिवर्तनाील सामाजिक यथार्थ को रचनात्मक माध्यम से व्यक्त करने वाला रचनाकार ही समकालीन कहा जागएगा। समकालीन रचनाकार समसामयिक वस्तुस्थिति के साथ परिवर्तन का आकांक्षी भी होता है। समकालीन साहित्य में एक आन्दोलन धर्मी प्रवृत्ति है। अपने गहरे कथात्मक अन्वेषण, अनुसंधान और अछूते विषयों को केंद्र में रखकर हिंदी कथा साहित्य में अपनी अलग और दोज की छवि बनाए रखनेवाले कथाकार भगवानदास मारवाल की रचनाओं में ये आन्दोलन धर्मी प्रवृत्ति मिलता है। यही उसको रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। प्रचलित विमार्शों के बरअक्स मौजूद सामाजिक राजनीतिक परिवर्तनों, सर्वसत्ता एवं लोकविरोधी तत्वों तथा आम आदमी की प्रबल अदम्यता और जिजीविषा की पडताल करने वाले भगवानदास मोरवाल बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उपन्यास के साथ-साथ कहानी, कविता और अन्य साहित्यिक विधाओं में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई। भगवानदास जी के कहानियों की विचार करने के संदर्भ में डॉ. मधु खराटे का यह कथन महत्वपूर्ण है - "भगवानदास मोरवाल की कहानियाँ समसामयिक स्थिति पर आधारित होती है। उनकी कहानियों में वैचारिकता दृष्टिगत होती है, बल्कि यही उनकी कहानियों का प्रमुख स्वर रहा है।"1

मोरवाल जी के प्रमुख कहानी संग्रह है 'सिला हुआ आदमी', 'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार', 'सीढ़ियाँ, 'माँ और उसका देवता', 'लक्ष्मण रेखा' और 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ।' सन् 2008 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' में शहरी और ग्रामीण जीवन की मानसिकता को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों के केन्द्र में जातीयता की विभीषिका, राजनीति, शिक्षा, समाज में कायम छुआछूत, नौकरी और पुलिस से संबंधित कहानियाँ शामिल है। 'छल', 'सौदा', 'बियाबान', 'चोट' आदि 15 कहानियों से संग्रहित प्रस्तुत रचना में समाज के भ्रष्ट जनजातियों के जीवन की गाथा चित्रित है।

आज भी हमारे ग्रामीण समाज में छुआ-छूत के कट्टरता के साथ पालन किया जाता है। लेकिन शहर में आज काफी हद तक बदलाव आया है। 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी की नायिका है कमला। गाँव की कमला के घर में काम करनेवाली तारा चाची का लड़का मनोहर पढ़कर डॉक्टर बन जाता है। वह लोग निम्न जाती के है। कमला तारा चाची के बेटे को पढ़ने के लिए पुस्तक देता है। लेकिन वह भी वैचारिक धरातल पर ऐसे विचारों से मुक्त नहीं है। ऐसे हालातों से पूछते हुए मनोहर डॉक्टर बन जाता है। आज भी समाज में ऐसे कई लोग मौजूद है जो व्यक्ति को मात्र उसकी जाति से पहचाना चाहते है। समकालीन दौर में 'हरिजन' शब्द निम्न जाति के लिए रूढ़ हो गया है। कहानी के एक अन्य स्त्री पात्र डॉ शालिनि जो पढ़ी-लिखी आधुनिक स्त्री है। निम्न जाति से जन्मी शालिनी पढ-लिखकर उच्च होडते तक पहूँच गयी है और वह इस जाति के दब्बे को हमेशा के लिए पहूँच ढालना चाहती है। उसके द्वारा भी काहीनकार ने इसी सच्चाई को जिसप्रकार उजागर करने का प्रयास किया है कि "मैं एक पढे-लिखे जानियस डॉक्टर से शादी करने जा रही हूँ न एक झाडू लगानेवाले महतर से।"2

इस प्रकार कहानीकार ने यह दिखाने का प्रयास चाहता है कि शिक्षा के कारण समाज में काफी बदलाव आये है। निम्न जाति के लोग जाति बन्धन से मुक्ति हासिल कर रहे है। लेकिन दूसरी और कमला जैसी अशिक्षित एवं उच्च जाति के लोगों के मन में जातिगत भावनाएँ आज भी विद्यमान है। समाज में आज भी व्यक्ति के गुणों से अधिक महत्व उसकी जाति को दिया जाता है। यहाँ पर मोरवाल जी ने आज हमारे समाज में बदलते जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया है।

'दुःस्वप्न की मौत' कहानी में लालचंद जो पिछडी जाति का है, उसकी पत्नी मैला उठाने का काम छोड देती है। वह बिमार पड जाती है और फिर से काम पर लग जाने से ठीक हो जाती है। कहानीकार ने इस कहानी

में हमारे समाज के कलंक जातिगत भेदभाव को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। लालचंद ने सपने में नया घर तो ले लिया। लेकिन उसके सामने समस्या घडी हुई कि जो ब्राह्मण गृहप्रवो के कर्मों के लिए आता है वह पैसों के अलावा कुछ भी इससे लेना नही चाहता। ब्राह्मण जाति हमारे चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ है, इसी कारण वे भी अपने को सर्वश्रेष्ठ मानते आ रहे है। लालचंद्र के घर से नकदी ले सकते हैं, पर सामान नहीं ले सकते ये उनकी ार्त है। यहाँ लेखक ने बहुत ही बडा व्यंग्य समस्त ब्राह्मण जाति पर कसा है। दलितों का उच्चवर्ग वालों के घर में प्रवो निषेध, मैला उठाने का कान करना, उनकी बस्ती गाँव से बाहर होती है, उनके कुएँ भी अलग होते है, उन सारी बातों का असर आज भी ग्रामीण जीवन में पाया जाता है। रचनाकार ने इन कहानियों के ज़रिए उच्चवर्ग की संकुचित मानसिकता को उजागर करते हुए दलितों में आए बदलाव को भी प्रस्तुत करने का कार्य किया है।

'भाँवर' कहानी की सूश्री रति पांडे, पक्की रातनीतिज्ञ है। उन्होंने अवय ही राजनीति में धोखा खाया हैं। रति पांडे हाणिए से बाहर निकलकर समाज को कई राह दिखाने का कार्य किया है। 'निमंत्रण' कहानी में अपनी कंपनी को बड़ा ऑडर मिलने एवं इसलिए मेहमान को खु करने के लिए बेटी को स्वागत के लिए कहा जाता है। पर बाद में पिता को ही डर लगता है कि मेहमान उसकी बेटी का ही इस्तेमाल न करें। 'परिणति' कहानी का नायक अलोक अपनी प्रेमिका अपूर्वा को ाादी के बाद काले काँचवाली और काले पर्देवाली गाडी में ही बैठकर बाहर जाने की अनुमती देता है। अन्य मर्द उस पर नज़र न डाले इसलिए उसे बाहर आने-जाने का साथ रहता है। ऐसा कहने पर नायिका गुस्सा हो जाती है और उसे छोड़कर चली जाते है। अलोक अपनी प्रेमिका को महज एक चीज़ समझता है। इसलिए दुनिया से बचाकर रखना चाहता है और उसे दुनिया और खुद अपनी प्रेमिका पर भी भरोसा नहीं है। इसलिए सदैव पास ही रखना चाहता है। उसके अंदर के डर को वह छुपा नहीं पाता और प्रेमिका को भी खो देता है।

आज सबसे ज़्यादा समस्या है विस्थापितों की। भारत खेती प्रधान दो है। आज नगरीय जीवन के प्रति आकर्षण के कारण लोग गाँव छोडकर ाहर की तरफ जा रहे है। 'बियाबान' कहानी में विस्थापित हिंदु-मुस्लिम तथा गाँव-ाहर की समस्या को चित्रित किया गया है। गाँव में जिस आत्मीयता के साथ दादा ने एक विस्थापित हिंदू को अपनी पाँच बीघा ज़मीन दिया है, उसी के पौते को आगे चलकर वही विस्थापित अपने कारखानों में नौकरी में नौकरी तक नहीं दे पाता और उसकी कोम पूछता है जो उसके दादा ने नहीं पूछी थी - "कुछ समझ में नहीं आया बिसनाथ के, सिवाय इसके कि इस दो की विडंबना देखिए जो कभी यहाँ ारण लेने आए थे। वे मालिक बन बैठे हैं। ठीक वैसे ही जैसे गुलाम हिंदुस्थान में अंग्रेज़ों के लिए जो लोग मुखबिरी करते-करते जागीदार बन बैठे थे, आज़ाद भारत में वही लोग स्वतंत्रता सेनानी बने हुए है।"3 आज व्यक्ति अपनी मज़बूरी के कारण ही ाहर में दूर-दूर नौकरी के लिए भटकना पड़ता है, और जाति के नाम पर उसे नौकरी दी जाती है। इसके अलावा प्रस्तुत कहानी में गाँव और ाहरी जीवन में कितना अंतर होता है, यह प्रस्तुत किया है। गाँव में व्यक्ति को प्रेम-स्नेह आसानी से प्राप्त हो जाता है, वही ाहर में ढूढ़ने पर भी नहीं मिलता। दिखावे की ज़िंदगी जीने के लिए सब आदी हो गए है।

'छल' हाणिएकृत समाज की ाक्षा संबन्धी कहानी है। एक पिछडे से गाँव में सरकारी स्कूल में कोई प्राध्यापक आते है तो वह स्कूल का या गाँव का कुछ भला नहीं सोचते। मास्टर जी की इसी मानसिकता को कहानिकार ने कहानी में इस प्रकार दिखाया है कि "मास्टर जी बनने के बाद मजे ही मजे है। न कोई चिंता, न कोई फिंकर। बच्चों को पढ़ाओ, या ना पढ़ाओ। कभी आओ, कभी जाओ"4 राजनीतिज्ञ की कोाि से अपनी बदली करता देता है और स्कूल को अपने हाल पर छोड़कर चले जाते हैं। आज कई पिछडे इलाकों में ऐसी समस्याएँ देखी जा सकती है।

आज भी ऐसे अनेक मुद्दाओं के कारण समाज में लोग सदियों पुरानी पीढ़ी की तरह ही जीते आ रहे है। मोरवाल जी ने इन सारी बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करवाकर इस बात का निर्दो करने का प्रयास किया है कि आज इक्कीसवीं सदी में हमें इन सारे भेद-भावों को दूर करके हाशिएकृत लोगों को भी समाज की प्रगति में जोडना है। मोरवाल ने ऐसे ही हाशिए में रहने पह अभिाप्त लोगों की मानसिकता को बदले एवं उन्होंने मुख्य धारा से जोडने का कार्य किया है। साथ ही साथ जिन संकुचित मानसिकता के साथ वे जी रहे है, उस मानसिकता को छोडकर आगे बढ़ने की सोच भी उन्होंने दी है।

संदर्भग्रन्थ सूची :

1. डॉ मधु खराटे - उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल - पृ. 21
2. भगवानदास मोरवाल - सीढ़ियाँ, माँ और उसका देवता, पृ. 179
3. वही, पृ, 188
4. वही, पृ. 161